बदलाव के वाहक और अहिंसक कार्यवाही

Agents of Change and Nonviolent Action

Hardy Merriman

Conservation Biology, Volume 22, No. 2, April 2008
Translation: Madhu Bala Joshi, September 2018 (Evaluated by Ramesh Sharma)

बदलाव के वाहक और अहिंसक कार्यवाही

अहिंसक कार्यवाही अपने अधिकारों, स्वतंत्रता और न्याय के लिये संघर्ष का आम लोगों का एक तरीका है। इसे अक्सर नैतिक अहिंसा से जोड़ा जाता है लेकिन मैं इसे किसी तरह के नैतिक आधार से निरपेक्ष, अपने आप में एक अलग घटना के रूप में व्यक्त करते हुए दिखाऊंगा कि संघर्ष में यह लाभ की स्थिति पाने के एक व्यावहारिक तरीके के रूप में कैसे कारगर रहती है।

अहिंसक कार्यवाही इस गहरी समझ पर आधारित है कि किसी समाज में सत्ता अंततः लोगों की सहमति और आज्ञाकारिता से तैयार होती है। इसके विपरीत, प्रचलित दृष्टिकोण यह है कि किसी समाज में सत्ता उस में निहित होती है जिसके पास धन-संपत्ति और अधिकतम हिंसा की सामर्थ्य होती है। लेकिन जैसे अर्थव्यवस्था जैवमंडल का एक उपतंत्र है और इसलिये अंततः जैवमंडल के नियमों से नियंत्रित होती है, उसी तरह हिंसा और धन पर आधारित दिखती सत्ताव्यवस्थाएं दरअसल हजारों-लाखों लोगों के व्यापक व्यवहार और आज्ञाकारिता की पद्धतियों का उपतंत्र है। अगर यह लोग अपनी निष्ठा, व्यवहार और आज्ञाकारिता को बदल लें तो समाज और दुनिया के शक्ति-संतुलन में बदलाव आ जायेगा। सीधे शब्दों में कहें तो, अगर लोग आज्ञापालन करने से इनकार कर दें तो शासक या निगम शासन नहीं कर पायेंगे।

इसलिये अहिंसक कार्यवाही सामूहिक स्तर पर लोगों की निष्ठा, व्यवहार और आज्ञापालन की पद्धतियों में बदलाव ला कर अपनी ताकत दिखाती है। यह ताकत अचानक, नाटकीय ढंग से दिख सकती है, जैसाकि कुछेक बार भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, अमेरिकी नागरिक अधिकार आंदोलन, विभिन्न श्रमिक संघर्षों (जैसे 1960 के दशक के मध्य में यूनाइटेड फ़ार्म वर्कर्स आंदोलन), और फ़र्डिनेंड मार्कोस (1986), आगस्तो पिनोचेट (1988), दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद (1980-90 का दशक), स्लोबोदन मिलोसेविक (2000), और यूक्रेन की निरंकुश व्यवस्था के पतन (2004) में दिखा। यह बदलाव कुछ महीन ढंग से हो सकते हैं, जैसेकि जब लोग स्थानीय व्यवसायों से खरीददारी करने, किसी उत्पाद का बहिष्कार करने, या वैकल्पिक संस्थानों और अर्थव्यवस्थाओं के विकास के लिए काम करना चुनते हैं। वैसे तो इस के अनेक रूप और तरीके हैं लेकिन अहिंसक कार्यवाही के सभी कृत्य इन तीन में से किसी एक श्रेणी में आते हैं: (1) अपेक्षित कृत्य यानि जब लोग वे काम करते हैं जिन की उन से अपेक्षा नहीं रखी जाती या उन्हें नहीं करने चाहियें या उन्हें करने की अनुमति नहीं है ; (2) अनपेक्षित कृत्य यानि जब लोग वे काम नहीं करते जिन की उन से अपेक्षा रखी जाती है या उन्हें करने चाहियें या करने ज़रूरी हैं ; या (3) इन दोनों तरह के कृत्यों का सुमेल।[1]

लोगों की आज्ञाकारिता और व्यवहार पद्धतियों में बदलाव को प्रोत्साहित करने के लिए सब से पहले तो यह समझना महत्वपूर्ण है कि लोग जिस तरह से आज्ञापालन और आचरण करते हैं वैसा करते क्यों है। इस के कारण अलग-अलग समाजों में अलग-अलग हो सकते हैं, लेकिन दुनिया भर में कार्यकर्ताओं और संयोजकों के साथ काम करते हुए मैंने आज्ञाकारिता के दो सबसे आम कारण यह पाए हैं - पहला, लोगों को लगता है आचरण का कोई वैकल्पिक तरीका नहीं है ; और दूसरे उन में यह आत्मविश्वास नहीं है कि उनके कृत्यों से कुछ बदलाव होगा। बहुत से लोग यह भूल गए हैं कि अपने समाज में असली शक्तिवान वे स्वयं हैं। निस्संदेह औपचारिक शिक्षा, निगम, सरकारें और मीडिया सत्ता के सरकारी भवनों या निगम मुख्यालयों में बैठे कुछ लोगों में बसने और धन और बंदूकों (जिन पर इन लोगों का एकाधिकार है) के सत्ता के चरम स्रोत होने के आख्यान को मज़बूत बनाते हैं। यह वर्णन उनके उद्देश्य के बहुत अनुकूल है।

बहरहाल, पूरे इतिहास में सफल अहिंसक आंदोलन ने लोगों को बताया है कि एक साझा दृष्टिकोण के कारण संगठित और रणनीतिक रूप से काम करते हुए लोग अपने सामूहिक कृत्यों के माध्यम से , सेनाओं और धन से अधिक शक्तिशाली सिद्ध होते हैं। शक्ति जुटाने के इच्छुक हर समकालीन जमीनी आंदोलन को इस सच्चाई को ध्यान में रखना चाहिए और अपने वक्तव्य का एक मज़बूत केंद्रबिंदु लोगों को यह बात याद दिलाते रहना बनाना चाहिये कि वे शक्तिसंपन्न हैं।

सफल आंदोलन जनता को केवल यही नहीं बताते कि तुम शक्तिशाली हो; वे इस से भी आगे बढ़ कर स्पष्ट, प्राप्त किये जा सकनेवाले उद्देश्य निर्धारित कर के और फिर उनकी जीतों का दस्तावेजीकरण और प्रचार करके, जनता की ताकत को प्रदर्शित करते हैं। यह जीतें सीमित हो सकती है, लेकिन वे लोगों को ज़बर्दस्त ढंग से एकजुट कर सकती हैं। उदाहरण के लिए, अमेरिका के नागरिक अधिकार आंदोलन ने अपनी ताकत को 1955-56 में मोंटगोमरी, अलाबामा में बसों में गोरे अमेरिकियों और अफ्रीकी-अमेरिकियों के साथ बैठने और 1960 में नैशविले में लंच काउंटरों पर गोरे अमेरिकियों और अफ्रीकी-अमेरिकियों के साथ-साथ बैठने-खाने पर केंद्रित किया था। 1930-31 में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन ने अपने प्रयासों को ब्रिटिश शासन से नमक कानून और दूसरे कानूनों में रियायतें पाने पर केंद्रित किया। इन लक्ष्यों की प्राप्ति अमेरिका के पूरे दक्षिणी भाग में काले और गोरे लोगों के लिये अलग-अलग सार्वजनिक सुविधाओं के प्रचलन के अंत या भारत में स्वतंत्रता प्राप्त करने के बड़े लक्ष्यों की तुलना में छोटी घटना थी। लेकिन उनका असली संप्रभाव यह रहा कि वे इन आंदोलनों के लिए उत्प्रेरक बने। इन जीतों ने लोगों को दिखाया कि उनके कार्य का असर होता है और वे परिवर्तन लाने में सक्षम हैं। इससे सहयोग और एकजुटता में भारी बढ़ोतरी हुई और यह आंदोलन राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय समुदायों का ध्यान आकर्षित करने लगे।

यह लक्ष्य सिर्फ़ इसीलिये प्राप्त नहीं हुए थे क्योंकि अमेरिकी नागरिक अधिकार आंदोलन या भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन ज़बर्दस्त किस्म की नैतिकता पर टिके थे। उन की प्राप्ति में कठिन परिश्रम, रचनात्मकता, और कुशल राजनीतिक विश्लेषण की भी बड़ी भूमिका रही। यह सच सभी सफल अहिंसक कार्रवाइयों पर लागू होता है। बहरहाल, बहुत से लोग इस सच्चाई की अनदेखी करते हुए यह मानते हैं कि अहिंसक कार्यवाही मुख्य रूप से सार्वजनिक विरोध, आक्रोश की अभिव्यक्ति, और नैतिक निषेध में निहित है; या फिर इसकी सफलता किसी करिश्माई नेता या कुछ रहस्यमयी शक्ति पर निर्भर होती है। ऐसी बात नहीं है। अहिंसक कार्यवाही में केवल सैद्धांतिक रूप से शांतिवाद या नैतिक अहिंसा के लिये प्रतिबद्ध लोगों की ही जरूरत नहीं है। इसके लिये ज़रूरत है लोगों को संगठित करनेवाली समावेशी दृष्टि की, जोरदार रणनीतिक योजना की, जनता से प्रभावी संवाद और स्थिति के अनुरूप उचित तरीकों की पहचान की। सब रोगों की एक दवा जैसा कोई सूत्र नहीं है-अहिंसक कार्यवाही हर जगह के लिये विशिष्ट और अलग होती है। हालांकि इसे नियंत्रित करनेवाले सिद्धांत, जैसेकि सत्ता का सहमति और आज्ञापालन पर आधारित होना, सभी संघर्षों में स्थायी घटक है। इसका लागू होना किसी समाज के संदर्भ और विशेषताओं पर निर्भर करता है। अहिंसक कार्यवाही चाहे साहसभरी सार्वजनिक कारवाई के रूप में प्रकट हो, खरीदने की पद्धतियों में सूक्ष्म बदलाव हों या दोनों ही हों (ज़्यादातर आंदोलनों में अलग-अलग स्तर पर जुड़े लोगों के इस्तेमाल के लिये विविध रणनीतियां होती हैं), यह लोगों को अपने समाज में एक ऐसा राजनीतिक स्थान बनाने या इस्तेमाल करने का एक तरीका देती है जहां से वे एक जमे बैठे प्रतिपक्षी से रियायतें ले पाने में सक्षम होते हैं।

[1]Gene Sharp, Waging Nonviolent Struggle: 20th Century Practice and 21st Century Potential, (Boston, MA: Porter Sargent Publishers), 2005, p. 547.

सौभाग्य से, शानदार परिणाम प्राप्त करने के लिए जनता द्वारा अहिंसक कार्यवाही का उपयोग करने और ऐतिहासिक रूप से किये जाते रहने पर बहुत बौद्धिक कार्य, शोध, और संवाद हुए हैं। अहिंसक कार्यवाही की शक्ति और संभावना को पहचाननेवालों के बीच इसकी जानकारी की मांग बढ़ रही है। आपको इसके बारे में ज़्यादातर समाचारपत्रों में पढ़ने को नहीं मिलेगा, न ही आप राजनीतिज्ञों को इसके बारे में बात करते पाएंगे, लेकिन अगर आप दुनिया में कहीं भी जमीनी-स्तर के आयोजकों और नागरिक समाज के सदस्यों से बात करें तो वे आपको अहिंसक कार्यवाही की ताकत के बारे में बताएंगे। वे यह बात समझते हैं कि समाज में परिवर्तन का वाहक जनता है और ढांचे में परिवर्तन जमीनी स्तर से तैयार होता है। वे नेतृत्व करने के लिये किसी का इंतजार नहीं कर रहे होते क्योंकि वे यह बात समझते हैं कि अगर जनता सक्रिय रूचि नहीं ले रही तो, ज़्यादातर सरकारें और कॉर्पोरेट लीडर सही काम करने की दिशा में कदम नहीं बढ़ाएंगे। इसलिए पूरी दुनिया में और अधिक लोग अपने समुदायों को मानवाधिकार, स्वतंत्रता, न्याय, पारदर्शिता, महिलाओं - देशज समुदायों- अल्पसंख्यकों के अधिकार और पर्यावरण संरक्षण प्राप्त करने के लिए सशक्त बनाने के व्यावहारिक उपाय के रूप में अहिंसक कार्यवाही (जिसे वे मतदान, कानूनी व्यवस्था, या परिवर्तन के दूसरे पारंपरिक साधनों के साथ इस्तेमाल कर सकते हैं) की ओर आकर्षित हो रहे हैं। अहिंसक कार्यवाही के उपयोग का चाहे जो भी उद्देश्य हो, जनता के मानस में उसकीताकत की अवधारणा का पुनर्निर्धारण एक अनिवार्य शर्त होती है। इस जानकारी को साझा करना, लोगों को उनकी ताकत के बारे में जागरूक करना, मानवता के दिशापरिवर्तन के लिए एक अनिवार्य कार्य है।

© 2008 Hardy Merriman. *A slightly modified version of this essay appeared in: Conservation Biology, Volume 22, No. 2, April 2008 pp. 241-2.
इस निबंध का कुछ संशोधित रूप 'कंज़र्वेशन बायोलजी; वाल्यूम 22, नम्बर 2, अप्रैल 2008 में पृष्ठ 241—2' में प्रकाशित हुआ।